RESEARCH RIVAL **ISSN: 2456-1096**
(A Multi-Disciplinary Peer-Reviewed and Refereed Bi-Annual Research Journal) **Vol. 10, Issue 2**
July-December 2024

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार निपुण भारत मिशन के तहत खेल आधारित शिक्षण शास्त्र पद्धति का प्रयोग करते हुए कक्षा–कक्ष में विद्यार्थियों का न्यायसंगत समावेशन करना एवं उन्हें बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान कौशलों में निपुण बनाना : एक अध्ययन

डॉ विजय कुमार चावला, हिंदी प्राध्यापक
आरोही आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ग्योंग, (6642) जिला कैथल,हरियाणा।
E.mail- vijaychawla95@gmail.com, vijaychawla95a@gmail.com

सारांश :
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस बात पर बल देती है कि ''सामाजिक न्याय और समानता प्राप्त करने के लिए शिक्षा सबसे बड़ा साधन है।'' सभी विद्यार्थियों के लिए एक न्यायसंगत और समावेशी शिक्षण वातावरण तैयार करना ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मुख्य लक्ष्य है। समावेशी कक्षा का उद्देश्य सभी छात्रों को उनकी विविध क्षमताओं, अनुभवों और दृष्टिकोणों के लिए कक्षा में महत्त्व देना है। विदित है कि एक न्यायसंगत और समावेशी कक्षा में प्रत्येक विद्यार्थी को सीखने के समान अवसर प्रदान किए जाते हैं तथा उसके साथ न्यायसंगत व्यवहार भी किया जाता है। निपुण भारत मिशन बुनियादी चरण में ही सीखने के अनुभव को समग्र, एकीकृत 'समावेशी' सुखद और आकर्षक बनाने की परिकल्पना करता है। यह सामाजिक–आर्थिक रूप से वंचित समूह को भी लाभान्वित करता है और इस प्रकार समान और समावेशी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच सुनिश्चित करता है।
इस शोध–पत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार निपुण भारत मिशन के तहत खेल आधारित शिक्षण शास्त्र पद्धति का प्रयोग करते हुए कक्षा–कक्ष में विद्यार्थियों का न्यायसंगत समावेशन किस प्रकार किया जा सकता है एवं उन्हें बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान कौशलों में कैसे खेल गतिविधि आधारित शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में शामिल करते हुए निपुण बनाया जा सकता है, पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। शोधकर्ता का मानना है कि कक्षा–कक्ष में खेल–खेल में शिक्षण सभी बच्चों की शिक्षा के लिए फायदेमंद है, यह विशेष रूप से उन छात्रों की सहायता करने के लिए वरदान सिद्ध हो रहा है जो विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं के कारण कक्षा में संघर्ष कर रहे होते हैं। कक्षा–कक्ष में शोधकर्ता ने निपुण भारत मिशन के तहत बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान कौशलों को विकसित करने के लिए विद्यार्थियों का समावेशन करते हुए जब ऑनलाइन (डिजिटल) तथा ऑफलाइन खेलों का प्रयोग स्मार्ट डिजिटल लैब में किया तो पाया कि सभी विद्यार्थी खेलों में सक्रिय भागीदारी लेते हुए तथा विषय में रूचि लेते हुए अपनी–अपनी दक्षताओं में निपुण बन रहे थे।
इसके अतिरिक्त शोध–पत्र में शोधकर्ता द्वारा कक्षा–कक्ष में प्रारंभिक स्तर के विद्यार्थियों को किस प्रकार ऑनलाइन तथा ऑफलाइन खेलों (मेज गेम, मैच गेम, रैंडम व्हील गेम, क्विज गेम, ड्रैग एंड ड्रॉप गेम, एनाग्राम गेम, फ्लिप द टाइल्स गेम, बैलून पॉप गेम, एयरप्लेन गेम, व्हेक–ए–मोल गेम, लूडो गेम, सांप और सीढ़ी गेम, बिंगो गेम, भूलभुलैया गेम आदि) का प्रयोग करते हुए विद्यार्थियों की बुनियादी दक्षताओं का आंकलन किया जा सकता है, को भी दर्शाया गया है। शोधपत्र के निष्कर्ष में यह बताया गया है कि खेल–खेल में शिक्षण करवाने से सभी विद्यार्थियों की विशिष्ट सीखने की जरूरतों को पूरा किया जा सकता है। शोधकर्ता का मानना है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षक कक्षा–कक्ष में सभी विद्यार्थियों का न्यायसंगत समावेशन करते हुए तथा खेल आधारित शिक्षण शास्त्र का निरंतर प्रयोग करते हुए सभी विद्यार्थियों को बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान कौशलों में आसानी से निपुण बना सकते हैं और उनका समग्र विकास भी आसानी से कर सकते हैं।

सार शब्द : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, समावेशी शिक्षा, खेल आधारित शिक्षण शास्त्र, निपुण भारत मिशन, बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान

भूमिका :
शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली सोदेश्य सामजिक प्रक्रिया है। शिक्षा मानवीय क्षमताओं के विकास का प्रमुख साधन है। शिक्षा पर सभी का अधिकार है अतः शिक्षा का अब समावेशीकरण हो रहा है, जिसमें सबको समाहित किया जा रहा है। ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था और तकनीकी दक्षता वाले 21वीं सदी के भारत की अस्मिता और उसके विश्व गुरू बनने की प्रक्रिया समावेशी शिक्षा के माध्यम से ही सम्भव हो सकेगी। इस सन्दर्भ में भारत की नई शिक्षा नीति 2020 महत्वपूर्ण कदम साबित होने जा रहा है। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 जिसका उद्देश्य समानता और समावेशन सुनिश्चित करते हुए भारत को वैश्विक ज्ञान

महाशक्ति बनाना है, ने शैक्षिक प्रणाली में एक संरचनात्मक परिवर्तन का संचार किया है।

''न्यायसंगत और समावेशी शिक्षा'' पर इसके जोर का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि किसी भी बच्चे को उसकी पृष्ठभूमि या सामाजिक–सांस्कृतिक पहचान के आधार पर शैक्षिक अवसरों से वंचित न किया जाए। समावेशी शिक्षा एक ऐसी शिक्षा होती है जिसमें सामान्य बालक–बालिकाएं और मानसिक तथा शारीरिक रूप से बाधित बालक एवं बालिकाएं, सभी एक साथ बैठकर एक ही विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करते हैं।

समावेशी शिक्षा की आवश्यकता हर देश में आवश्यक है क्योंकि बालक समावेशी शिक्षा की सहायता से सामान्य रूप से शिक्षा ग्रहण करता है तथा अपने आप को सामान्य बालक के समान बनाने का प्रयास करता है। भले ही समावेशी शिक्षा में प्रतिभाशाली बालक, विशिष्ट बालक, अक्षम बालक और बहुत सारे ऐसे बालक होते हैं, जो सामान्य बालक से अलग होते हैं। इन्हें एक साथ इसलिए शिक्षा दी जाती है ताकि उन बालकों (जो सामान्य बालक से अलग होते हैं) में अधिगम की क्षमता को बढ़ाया जा सके। प्रत्येक राष्ट्र अपने यहां के सभी लोगों को साक्षर बनाने का प्रयास करता है ताकि राष्ट्र की उन्नति हो सके। यह बात तो सिद्ध है कि जिस राष्ट्र के ज्यादातर लोग शिक्षित हैं, वह राष्ट्र ज्यादा उन्नति कर रहा है तथा जिस राष्ट्र के कम लोग पढ़े लिखे हैं, वह राष्ट्र गरीब हैं।

अतः समावेशी शिक्षा होने से सभी प्रकार के बच्चे अपने पास के स्कूल में जाकर पढ़ सकते हैं। जो विशेष आवश्यकता वाले बच्चे (दिव्यांग) पहले विशेष स्कूल दूर होने के कारण शिक्षा से वंचित रह जाते थे, वे अब समावेशी शिक्षा के आने से पास के स्कूल में ही दूसरे बच्चों के साथ अपनी शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। सभी प्रकार के बच्चों के शिक्षा ग्रहण करने पर राष्ट्र की साक्षरता दर बढ़ेगी तथा भविष्य में वह राष्ट्र अवश्य ही विकसित राष्ट्र बनेगा।

समावेशी शिक्षा इसलिए भी जरूरी है कि जब एक ही स्कूल में दिव्यांग बच्चे एवं सामान्य बच्चे पढ़ेंगे तो उन्हें बचपन से ही एक दूसरे की कमियां एवं क्षमताएं जानने का मौका मिलेगा तथा सामान्य बच्चों में दिव्यांग बच्चों के प्रति रूढ़िवादी विचारधारा दूर होगी। वहीं दिव्यांग बच्चे, सामान्य बच्चों के अच्छे व्यवहारों को सीख सकते हैं।

समावेशन सबके लिए सामान्य स्कूल के प्रत्यक्ष को स्पष्ट करती है। यह एक ऐसा शैक्षिक प्रतिरूप है जो सार्वभौमिक समाज के निर्माण एवं विकास के उद्देश्य से प्रत्येक व्यक्ति को समान जगह देता है। यूनेस्को ने अपने अंतरराष्ट्रीय शैक्षिक सम्मेलन जिनेवा, 2008 में समावेशी शिक्षा पर चर्चा को और स्पष्ट किया कि समावेशी शिक्षा छात्रों के गुणात्मक शिक्षा के मौलिक आधार पर आधारित है, जो आधारभूत शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर जीवन को समृद्ध बनाती है।

समावेशी शिक्षा दिव्यांग और सीखने की कठिनाइयों वाले बच्चों को उनके साथियों के साथ एक ही छत के नीचे शिक्षित करने का एक नया दृष्टिकोण है। समता और समावेशन का लक्ष्य अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के केंद्र में है। NEP 2020 के अध्याय 6 एवं अध्याय 14 में समावेशी एवं समतामूलक शिक्षा के मुद्दे पर चर्चा की गई है। NEP 2020 का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी बच्चा अपने जन्म या पृष्ठभूमि से जुड़ी परिस्थितियों के कारण ज्ञान प्राप्ति या सीखने और उत्कृष्टता प्राप्त करने के किसी भी अवसर से वंचित नहीं रह जाए। NEP 2020 में दिव्यांग बच्चों की समान भागीदारी सुनिश्चित करना प्राथमिकता के रूप में लिया गया है। यह नीति दिव्यांग जन अधिकार अधिनियम, 2016 के सभी प्रावधानों के साथ पूरी तरह सुसंगत होगी। समावेशी शिक्षा के तहत निम्न क्षेत्रों के बच्चों का समावेशन किया जाता है:–

समावेशी शिक्षा की आवश्यकता हर देश में आवश्यक है क्योंकि बालक समावेशी शिक्षा की सहायता से सामान्य रूप से शिक्षा ग्रहण करता है तथा अपने आप को सामान्य बालक के समान बनाने का प्रयास करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक प्रमुख लक्ष्य सभी के लिए समावेशी और समान शिक्षा प्रदान करके सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देना है। इसे प्राप्त करने के लिए नीति विशेष रूप से वंचित और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लिए शिक्षा तक पहुंच में असमानताओं को कम करने की आवश्यकता पर जोर देती है। सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देने के लिए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कई प्रमुख क्षेत्रों पर केंद्रित है, जो निम्न प्रकार से हैं:–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक व्यापक नीति है, जिसका उद्देश्य सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देने और शिक्षा तक पहुंच में असमानताओं को कम करने पर ध्यान देने के साथ भारत में शिक्षा की गुणवत्ता और पहुंच में सुधार करना है। निपुण भारत मिशन को सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सफल कार्यान्वयन के लिए आरंभ किया गया है। इस योजना के माध्यम से 'बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान कौशल' विकसित करने पर ध्यान दिया जा रहा है। इस मिशन का प्रमुख लक्ष्य है कि वर्ष 2026–27 तक प्रत्येक बच्चे में तीसरी कक्षा के अंत तक बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान कौशल विकसित हो सके। इस मिशन के अंतर्गत 3 वर्ष से लेकर 9 वर्ष तक की आयु के सभी बच्चों का न्यायसंगत समावेशन किया जा रहा है। निपुण भारत मिशन बुनियादी चरण में ही सीखने के अनुभव को समग्र, एकीकृत, समावेशी, सुखद और आकर्षक बनाने की परिकल्पना करता है। यह सामाजिक–आर्थिक रूप से वंचित समूह को भी लाभान्वित करता है और इस प्रकार समान और समावेशी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच सुनिश्चित करता है।

शोधकर्ता द्वारा अपने इस शोध पत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार निपुण भारत मिशन के तहत खेल आधारित शिक्षण–शास्त्र पद्धति का प्रयोग करते हुए कक्षा–कक्ष में विद्यार्थियों का किस प्रकार न्यायसंगत समावेशन किया जा सकता है एवं उन्हें बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान कौशलों में कैसे खेल गतिविधि आधारित शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में शामिल करते हुए निपुण बनाया जा सकता है, पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

उद्देश्य :

भारत के शिक्षा मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के तहत समझ और संख्यात्मकता के साथ पढ़ने में निपुणता के लिए 'निपुण भारत मिशन' की शुरूआत की गई है। यह योजना सुनिश्चित करती है कि भारत में प्रत्येक बच्चा ग्रेड–3 के अंत तक मूलभूत संख्यात्मकता और साक्षरता हासिल कर ले। बच्चों में बुनियादी भाषा एवं साक्षरता की समझ होना बहुत महत्त्वपूर्ण है। जिसके माध्यम से वह भविष्य में बेहतर शिक्षा प्राप्त कर पाएंगे। विदित है कि भाषा का पहले से मौजूद ज्ञान, भाषाओं में साक्षरता कौशल के निर्माण में मदद करता है। मूलभूत भाषा और साक्षरता के प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं:–

- मौखिक भाषा का विकास।
- डकोडिंग कौशल का विकास।
- प्रवाहपूर्ण पढ़ना।
- समझ के साथ पढ़ना।
- लिखने के कौशल का विकास।

निपुण भारत मिशन के तहत बुनियादी संख्यामकता एवं गणित कौशल को विकसित करने पर भी बल देने का प्रावधान किया गया है। बुनियादी संख्यात्मक ज्ञान का अर्थ है– तर्क करने की क्षमता और दैनिक जीवन की समस्या समाधान में सरल संख्यात्मक अवधारणाओं को लागू करना। बच्चों के अंदर संख्या बोध एवं स्थानीय समझ तब विकसित होती है जब वह निम्नलिखित कौशल प्राप्त कर लेते हैं। इन्हीं तथ्यों को मद्देनजर रखते हुए शोधकर्ता द्वारा अपने शोध शीर्षक "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार निपुण भारत मिशन के तहत खेल आधारित शिक्षणशास्त्र पद्धति का प्रयोग करते हुए कक्षा–कक्ष में विद्यार्थियों का न्यायसंगत समावेशन करना एवं उन्हें बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान कौशलों में निपुण बनाना : एक अध्ययन" शोध कार्य किया गया।

खेल–आधारित शिक्षण पद्धति एक ऐसी शिक्षण पद्धति है,जो सीखने की प्रक्रियाओं, नवाचार, उत्पादकता, ज्ञान को बनाए रखने और नए कौशल हासिल करने की क्षमता को बढ़ाती है। शोधकर्ता ने पिछले हुए शोधकार्यों का अध्ययन किया तो यह पाया कि खेल आधारित शिक्षण–शास्त्र पद्धति के प्रयोग से दिव्यांग विद्यार्थियों को अनेक लाभ हुए हैं। वास्तव में, 2018 के एक अध्ययन के अनुसार, दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के क्षेत्र में खेल–आधारित शिक्षण पद्धति अधिक अनुकूल है क्योंकि इसमें उनकी व्यक्तिगत जरूरतें होती हैं। दिव्यांग व अन्य विद्यार्थियों के न्यायसंगत समावेशन में यह पद्धति अत्यंत कारगर सिद्ध होती है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार निपुण भारत मिशन के तहत हिंदी और गणित के ऑनलाइन और ऑफलाइन खेल तैयार किए गए हैं।

कक्षा–कक्ष में खेल–आधारित शिक्षण पद्धति का प्रयोग करते हुए निपुण भारत मिशन के तहत बुनियादी संख्यात्मकता के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए बुनियादी समझ और दक्षताओं के डिजिटल इंटरएक्टिव ऑनलाइन तथा ऑफलाइन खेल तैयार करने के पीछे जो उद्देश्य रहे हैं, वे निम्न हैं:–

- विद्यार्थियों को बुनियादी स्तर पर भाषा सीखने–सिखाने के लिए भाषा–शिक्षण के चारों आधार–स्तम्भों का खेल–खेल में ज्ञान प्रदान करना।

- विद्यार्थियों में दैनिक जीवन के लिए प्रभावी सम्प्रेषण की कुशलता विकसित करना।
- खेल–खेल में भाषा–शिक्षण को रुचिकर व आनंदमयी बनाना।
- विद्यार्थियों में भाषा से जुड़े पाठ्यचर्या के लक्ष्यों को खेल–खेल में विकसित करना।
- बच्चों को रटंत प्रक्रिया के जाल से बाहर निकालना।
- विद्यार्थियों में समझ के साथ पढ़ने की प्रवृत्ति को विकसित करना।
- विद्यार्थियों में तर्क करने की शक्ति को विकसित करना।
- विद्यार्थियों के जीवन से जुड़े अनुभवों, संदर्भों, घटनाओं तथा उनकी मन की बातों को जोड़ते हुए उनका सर्वांगीण विकास करना।
- विद्यार्थियों में संख्याओं की समझ विकसित करना।
- विद्यार्थियों में कम या ज्यादा एवं छोटा या बड़ा की समझ विकसित करना।
- विद्यार्थियों को संख्याओं की तुलना कर पाने में सक्षम बनाना।
- दैनिक जीवन में तार्किक सोच और तर्क को विकसित करना।
- विद्यार्थियों में प्रारंभिक वर्षों के दौरान गणितीय नींव विकसित करना।
- विद्यार्थियों में हिंदी तथा गणित विषय को लेकर सृजनात्मक सोच विकसित करना।
- विद्यार्थियों का खेल गतिविधियों के माध्यम से समग्र विकास करना, जिसमें निम्न पहलू शामिल होंगे:

पद्धति एवं प्रक्रिया:

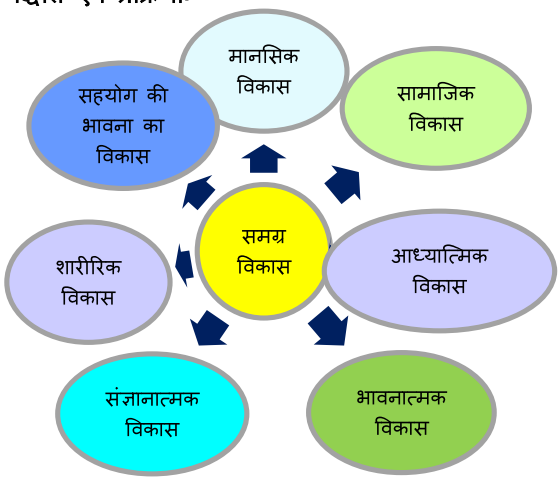

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार निपुण भारत मिशन के अंतर्गत कक्षा–कक्ष में विद्यार्थियों को समानता एवं समावेशी शिक्षा प्रदान करते हुए उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए खेल आधारित शिक्षण–शास्त्र पद्धति का प्रयोग निम्न प्रकार से किया गया।

- कक्षा–कक्ष में विद्यार्थियों को विभिन्न ऑनलाइन तथा ऑफलाइन खेल गतिविधियों के माध्यम से शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में शामिल किया गया।
- विद्यार्थियों को बुनियादी स्तर पर भाषा सीखने–सिखाने के लिए शिक्षण–अधिगम सामग्री का निर्माण कर उनका क्रियान्वयन करते हुए पढ़ाया गया।
- कक्षा–कक्ष में बुनियादी स्तर पर भाषा–शिक्षण के चारों स्तम्भों का विकास खेल–खेल में गतिविधियों के माध्यम से किया गया।
- बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के विभिन्न कौशलों को विकसित करने के लिए ऑनलाइन तथा ऑफलाइन खेल गतिविधियां तैयार करते हुए विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की गई।
- विद्यार्थियों को कक्षा–कक्ष में बुनियादी स्तर पर उनके अनुभव, तर्क व ज्ञान का प्रयोग करने के पूरे मौके प्रदान किए गए।
- कक्षा–कक्ष में बुनियादी पर मौखिक भाषा के विकास के लिए विभिन्न खेल गतिविधियां तैयार की गईं ताकि विद्यार्थियों को बातचीत तथा चित्रों पर चर्चा के अवसर देते हुए उनका समग्र विकास किया जा सके।
- चित्रों वाले पासे के खेल के माध्यम से, वर्ण/अक्षर पासे के खेल के माध्यम से भाषा शिक्षण करवाया गया।

➢ कक्षा–कक्ष में बुनियादी स्तर पर ऑफलाइन लैमिनेटेड शीट्स तैयार करते हुए खेल–खेल में लेखन कौशल का विकास किया गया।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा फाउंडेशनल स्टेज 2022 में वर्णित पंचकोशीय ज्ञान की निम्न अवधारणाओं को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा गणित विषय की विभिन्न खेल–गतिविधियां तैयार की गईं। पंचकोशीय ज्ञान की अवधारणाएं निम्न प्रकार से हैं:–

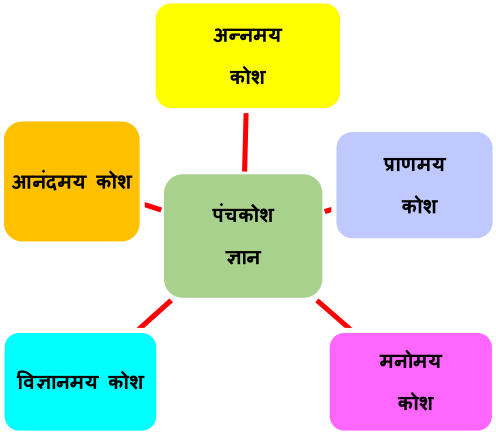

शोधकर्ता द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार निपुण भारत मिशन के तहत खेल आधारित शिक्षण–शास्त्र पद्धति का प्रयोग करते हुए कक्षा–कक्ष में विद्यार्थियों का न्यायसंगत समावेशन करना एवं उन्हें बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान कौशलों में निपुण बनाने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए खेलों के जरिए भाषा सिखाने हेतु विभिन्न खेल गतिविधियों का निर्माण एवं उनका क्रियान्वयन किया गया। शोधकर्ता द्वारा कक्षा–कक्ष में खेल आधारित शिक्षण–शास्त्र पद्धति का प्रयोग करने हेतु निम्न रणनीतियां अपनाई गईं:–

शोधकर्ता का मानना है कि आज के इस आधुनिक डिजिटल युग में 'निपुण भारत मिशन' के तहत प्रारंभिक स्तर पर विद्यार्थियों में बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मकता और उससे संबंधित अवधारणाओं की बुनियादी समझ और दक्षताओं को विकसित करने में खेल आधारित शिक्षण–शास्त्र पद्धति एक सर्वश्रेष्ठ पद्धति है। विदित है कि विद्यार्थियों को खेल–खेल में आसानी से विषय सिखाया जा सकता है। खेल–प्रणाली को शिक्षा में स्थान दिलाने का 'श्रेय कॉल्डवेल कुक' को जाता है। इस पद्धति में शिक्षा क्रियात्मक विधि द्वारा दी जाती है। इसमें बालक को आत्माभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतन्त्रता होती है। उसके सर्वांगीण अर्थात समग्र विकास को प्रोत्साहन भी मिलता है।

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में खेल आधारित शिक्षण–शास्त्र पद्धति की सहायता से तैयार डिजिटल ऑनलाइन तथा ऑफलाइन खेल जुड़ाव बढ़ाने और सीखने को मजेदार बनाने का एक शानदार तरीका है। ज्यादातर बच्चे कक्षा में खेल खेलना पसंद करते हैं। हिंदी तथा गणित प्रश्नोत्तरी/पहेलियां विद्यार्थियों को हिंदी व गणित के खेल के विभिन्न स्तरों के साथ चुनौती देकर और ध्यान केंद्रित करने में मदद करती हैं और उनके दिमाग की सीमाओं को बढ़ाती हैं। मस्तिष्क के खेल पहेलियों के साथ–साथ लीडरबोर्ड और विद्यार्थियों को जोड़े रखने के लिए अन्य प्रतिस्पर्धी कार्यक्षमता के साथ एक आई क्यू परीक्षण के दृष्टिकोण के साथ तैयार किए जाते हैं। विशेषकर गणित के शैक्षिक खेल विद्यार्थियों को रचनात्मक समाधान खोजने के लिए प्रेरित करते हैं और गणित में सीखी गई अवधारणा के बारे में छात्रों के डर को दूर करते हैं। इसके अतिरिक्त ऐसे खेल शिक्षार्थियों के लिए आकर्षक, प्रेरक और मजेदार होते हैं। जिससे गणितीय अवधारणाओं की गहरी समझ बनती है।

खेल आधारित शिक्षण–शास्त्र पद्धति, सीखने–सिखाने की एक सर्वश्रेष्ठ शिक्षण पद्धति है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता द्वारा निपुण भारत मिशन के तहत खेल आधारित शिक्षण–शास्त्र पद्धति का प्रयोग करते हुए विद्यार्थियों को बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान प्रदान करने के लिए इंटरैक्टिव डिजिटल ई–फ्लिप बुक तैयार की गई। इस डिजिटल ई–फ्लिप बुक में ऑनलाइन तथा ऑफलाइन खेल शामिल किए गए हैं।

शोधकर्ता द्वारा निपुण भारत मिशन के तहत बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान कौशल को विकसित करने के लिए तैयार ऑफलाइन व ऑनलाइन खेलों का प्रयोग कक्षा–कक्ष में किया गया। विद्यार्थियों ने सक्रिय भागीदारी निभाते हुए अपने भाषायी कौशलों का विकास किया। विद्यार्थियों ने ध्वनि जागरूकता तथा ध्वनि पहचान खेल–खेल में की। वर्ण/अक्षर पासे के खेल के माध्यम से तथा शब्द पहिए के खेल के माध्यम से उनके द्वारा शब्दों का निर्माण किया गया। चित्रों वाले पासे के खेल के माध्यम से विद्यार्थियों ने अपने–अपने शब्द भंडार का न केवल विकास किया बल्कि आपसी सहयोग की भावना से अपना सामजिक विकास भी किया। चित्रों वाले खेल के माध्यम से विद्यार्थियों में दैनिक जीवन के लिए प्रभावी सम्प्रेषण की कुशलता विकसित की गई। लूडो, सांप–सीढ़ी तथा बिंगो खेल के माध्यम से विद्यार्थियों में विकासात्मक लक्ष्यों को विकसित किया गया।

निपुण भारत मिशन के तहत ऑनलाइन खेल तैयार करते हुए विद्यार्थियों को डिजिटल तकनीक से रू–ब–रू करवाते हुए उनका समग्र विकास किया।

शोधकर्ता ने निपुण भारत मिशन के लिए तैयार ऑनलाइन तथा ऑफलाइन खेलों को अपने विद्यालय के विद्यार्थियों तथा शिक्षकों तक ही सीमित नहीं रखा बल्कि उन्हें अन्य विद्यालयों के विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को भी निःशुल्क प्रदान किया।

शोधकर्ता द्वारा निपुण भारत मिशन के अंतर्गत बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान कौशल विकसित करने के बच्चों को सीखने के मौके प्रदान किए गए तथा भाषायी एवं गणित विषय के खेलों की खेल प्रदर्शनी लगाई गई।

शोधकर्ता द्वारा **'शिक्षक पर्व 2022'** के पावन अवसर पर विभागीय दिशा–निर्देशों के अनुसार खंड स्तर के अन्य विद्यालयों में जाकर शिक्षकों को खेल आधारित शिक्षण–शास्त्र पद्धति जोकि सीखने–सिखाने की एक सर्वश्रेष्ठ शिक्षण–पद्धति है तथा उसकी उपयोगिता आदि के बारे में प्रशिक्षण प्रदान किया गया। निपुण भारत मिशन के तहत प्राथमिक स्तर के शिक्षकों को विद्यार्थियों में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान कौशल खेल–खेल में विकसित करने का प्रशिक्षण भी प्रदान किया। जिला स्तर पर सभी शिक्षकों को कक्षा–कक्ष में विद्यार्थियों का न्यायसंगत समावेशन किस प्रकार कर सकते हैं के बारे में जागरूकता प्रदान करने के लिए खेल प्रदर्शनी लगाई। 'शिक्षक पर्व 2022 के सुअवसर पर शिक्षकों को खेल आधारित शिक्षण–शास्त्र पद्धति का प्रयोग करते हुए विद्यार्थियों को शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में शामिल करने का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। शोधकर्ता द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्तर के प्राथमिक शिक्षकों को भी ऑनलाइन मोड में खेल आधारित शिक्षण–शास्त्र पद्धति का प्रयोग करते हुए शिक्षण करवाने का निःशुल्क प्रशिक्षण प्रदान किया गया। विद्यालय में शुरूआती दौर

में विद्यार्थियों के भाषायी कौशलों को खेल–खेल में किस प्रकार विकसित किया जा सकता है, का प्रशिक्षण दिया और उन्हें अपने सभी खेल तथा इंटरैक्टिव डिजिटल ई–फ्लिप बुक प्रदान की।

हाल ही में तेलंगाना राज्य द्वारा शोधकर्ता के भाषायी कौशलों को वहां के विद्यालयों में हिंदी भाषा शिक्षण में अपनाने का निर्णय लिया गया है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता द्वारा वहां के भाषा शिक्षकों को ऑनलाइन प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया है। शिक्षा विभाग तेलंगाना द्वारा तैयार शिक्षकों के लिए तैयार 'उन्नति हिंदी मॉड्यूल' में शोधकर्ता द्वारा तैयार भाषायी खेल शामिल किए गए हैं।

परिणाम और चर्चा :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2022 के अनुसार "निपुण भारत मिशन के तहत खेल आधारित शिक्षण–शास्त्र पद्धति का प्रयोग करते हुए कक्षा–कक्ष में विद्यार्थियों का न्यायसंगत समावेशन करना एवं उन्हें बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान कौशलों में निपुण बनाना" विषय को लेकर शोधकर्ता द्वारा खेलों के जरिए बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान सिखाने हेतु जो विभिन्न खेल सामग्री एवं गतिविधियां तैयार की गईं, वह सभी के लिए (धीमे शिक्षार्थियों के साथ–साथ प्रतिभाशाली बच्चों के लिए) लाभकारी सिद्ध हुईं। नवाचार तकनीक से तैयार अधिगम–शिक्षण खेल सामग्री के शैक्षिक परिणाम इस प्रकार के रहेः–

- कक्षा–कक्ष में जब विद्यार्थियों को भाषा सीखने–सिखाने के लिए खेल आधारित शिक्षण–अधिगम सामग्री का प्रयोग करते हुए पढ़ाया गया तो उसके बेहतर परिणाम देखने को मिले हैं।
- विद्यार्थियों में दैनिक जीवन के लिए प्रभावी सम्प्रेषण कर पाने की कुशलता विकसित होने लगी है।
- विद्यार्थियों को इंटरएक्टिव वर्कशीट, वेब पेज, बिंगो कार्ड के रूप में अभ्यास प्रश्नों को हल करने का अधिक मौका मिला है।
- कक्षा–कक्ष में आई०सी०टी० उपकरणों की सहायता से जो ऑनलाइन खेल–सामग्री तैयार की गई उससे शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया अधिक प्रगतिशील और प्रभावी होने लगी है।
- विद्यालय में ड्रॉप आउट दर कम हुई और विद्यार्थियों की उपस्थिति में इजाफा हुआ है।
- कक्षा–कक्ष में बुनियादी साक्षरता विकास हेतु किया जाने वाला भाषा शिक्षण एवं गणित शिक्षण रुचिकर एवं आनंददायक बनने लगा है।
- विद्यार्थी जो रटंत प्रक्रिया के आदि हैं, वह रटना छोड़कर समझ के साथ पढ़ने लगे हैं।
- विद्यार्थियों में अपने अनुभव साझा व तर्क करने की क्षमता विकसित होने लगी है।
- विद्यार्थियों में आपसी सहयोग की भावना विकसित होने लगी है।
- विद्यार्थी डिजिटल उपकरणों के साथ रूबरू होने लगे हैं।
- विद्यार्थियों में निम्न विकासात्मक लक्ष्यों का भी विकास होने लगा है।
- सामाजिक व्यवहार का विकास होने लगा है।
- सकल मोटर कौशलों का विकास होने लगा है।
- अच्छी और स्वस्थ आदतें विकसित होने लगी है।
- बच्चे प्रभावी संचारक बनने लगे हैं।
- ध्वनि संबंधी जागरूकता विकसित होने लगी तथा शब्दावली का विकास होने लगा है।
- सुनने और बोलने के कौशल का विकास होने लगा है।
- विद्यार्थी संख्या ज्ञान कौशल में विकसित होने लगे हैं।
- बच्चे सक्रिय शिक्षार्थी बनने लगे हैं।
- बच्चों का संवेदी संज्ञानात्मक विकास होने लगा है।
- पर्यावरण से संबंधित अवधारणाएं विकसित होने लगी।
- बच्चे संकल्पनाओं का निर्माण कर पाने में सक्षम हुए।
- विद्यार्थियों का खेल गतिविधियों के माध्यम से समग्र विकास होने लगा जिसमें निम्न पहलू शामिल रहेः

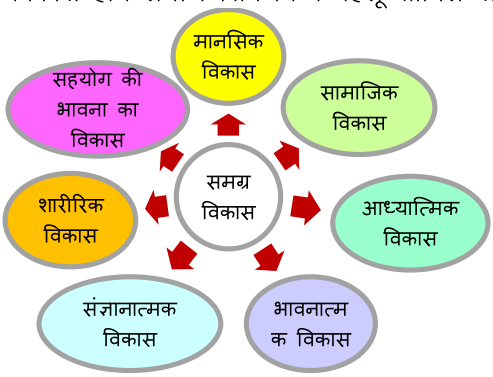

शोधकर्ता का मानना है कि समान और समावेशी शिक्षा सभी के लिए सीखना के तहत बिंदु 6-13 के अनुसार अधिकांश कक्षाओं में विशिष्ट सीखने की अक्षमता वाले बच्चे होते हैं, जिन्हें निरंतर समर्थन की आवश्यकता होती है। शिक्षकों को ऐसे विशिष्ट सीखने की अक्षमता वाले बच्चों की पहचान करने उनके लिए विशेष रूप से योजना बनानी चाहिए। शोधार्थी ने उपर्युक्त तथ्य को ध्यान में रखते हुए डिजिटल तकनीक की सहायता से खेल आधारित शिक्षण–शास्त्र पद्धति का उपयोग जिस तरह शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में किया उसके बेहतर

परिणाम देखने को मिले। फलस्वरूप शोधकर्ता के सभी खेल और इंटरैक्टिव डिजिटल ई–फ्लिप बुक सक्षम कक्षा पोर्टल कुरुक्षेत्र, दीक्षा पोर्टल हरियाणा तथा जिला कैथल राष्ट्रीय सूचना केंद्र कैथल की वेबसाइट पर अपलोड हो चुकी हैं। सभी विद्यार्थी व शिक्षक इसका लाभ उठाने लगे हैं।

शोधकर्ता द्वारा निपुण भारत मिशन के अंतर्गत बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान कौशल विकसित करने के लिए तैयार ऑनलाइन व ऑफलाइन खेलों के कार्यक्रम को वर्ष 2022 में CIET, NCERT, NEW DELHI द्वारा बेस्ट प्रोग्राम अवॉर्ड से सम्मानित किया गया था। NCERT, NEW DELHI द्वारा हाल ही में कक्षा 1 और 2 के लिए की तैयार की गई हिंदी की नई पाठ्यपुस्तक सारंगी भाग 1 और 2 में भोधकर्ता (पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति सदस्य) द्वारा खेल आधारित शिक्षण–शास्त्र पद्धति को ध्यान में रखते हुए विभिन्न खेल गतिविधियां तैयार करके दी गईं थी।

निष्कर्ष:

शोधकर्ता का मानना है कि "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार निपुण भारत मिशन के तहत खेल आधारित शिक्षण–शास्त्र पद्धति का प्रयोग करते हुए कक्षा–कक्ष में विद्यार्थियों का न्यायसंगत समावेशन करना एवं उन्हें बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान कौशलों में निपुण बनाना" के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए खेल आधारित शिक्षण–शास्त्र पद्धति की सहायता से तैयार ऑनलाइन तथा ऑफलाइन खेल सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को मजेदार बनाने का एक शानदार तरीका है।

खेल आधारित शिक्षण–शास्त्र पद्धति सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में एक सर्वश्रेष्ठ पद्धति मानी जाती है, क्योंकि यह सीखने की प्रक्रियाओं, नवाचार, मजा, उत्पादकता, ज्ञान को बनाए रखने की क्षमता और नए कौशल हासिल करने की अपील को बढ़ाती है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता द्वारा बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता और इससे संबंधित अवधारणाओं की बुनियादी समझ और दक्षताओं को विकसित करने के लिए इंटरएक्टिव ऑनलाइन और ऑफलाइन खेल विकसित किए गए। निपुण भारत मिशन के तहत ग्रेड–3 तक के युवा शिक्षार्थियों ने बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान के लक्ष्य प्राप्त किए और अच्छे परिणाम प्राप्त किए।

यह सर्वविदित तथ्य है कि एक न्यायसंगत समावेशी व्यवस्था बनाने के लिए कक्षा–कक्ष में दिव्यांग विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। शोधकर्ता द्वारा दिव्यांग विद्यार्थियों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए इंटरैक्टिव डिजिटल ई–फ्लिप बुक में ऑनलाइन डिजिटल तथा ऑफलाइन खेल विकसित किए गए। ये सभी खेल ध्यान विकार वाले बच्चों के लिए वास्तव में फायदेमंद सिद्ध हुए हैं। इन खेलों को खेलने के लिए विद्यार्थी लिंक को क्लिक करते ही तथा दिए गए खेल के QR कोड को स्कैन करते ही खेल सकते हैं।

शोधकर्ता का मानना है कि कक्षा–कक्ष में खेल–खेल में शिक्षण सभी बच्चों की शिक्षा के लिए फायदेमंद है, यह विशेष रूप से उन छात्रों की सहायता करने के लिए वरदान सिद्ध हो रहा है जो विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं के कारण कक्षा में संघर्ष कर रहे होते हैं। कक्षा–कक्ष में शोधकर्ता ने निपुण भारत मिशन के तहत बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान कौशलों को विकसित करने के लिए विद्यार्थियों का समावेशन करते हुए जब ऑनलाइन (डिजिटल) तथा ऑफलाइन खेलों का प्रयोग स्मार्ट डिजिटल लैब में किया तो पाया कि सभी विद्यार्थी खेलों में सक्रिय भागीदारी लेते हुए तथा विषय में रूचि लेते हुए अपनी–अपनी दक्षताओं में निपुण बन रहे थे।

शोधकर्ता का आगे मानना है कि खेल–खेल में शिक्षण करवाने से सभी विद्यार्थियों की विशिष्ट सीखने की जरूरतों को पूरा किया जा सकता है। अंततः कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षक कक्षा–कक्ष में सभी विद्यार्थियों का न्यायसंगत समावेशन करते हुए तथा खेल आधारित शिक्षण–शास्त्र का निरंतर प्रयोग करते हुए सभी विद्यार्थियों को बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान कौशलों में आसानी से निपुण बना सकते हैं और उनका समग्र विकास भी आसानी से कर सकते हैं।

संदर्भ :

1. नई शिक्षा नीति 2020 की रूपरेखा, अध्याय 6 एवं 14
2. मलिक, डॉ. वंदना, शर्मा, डॉ. आशा तथा शर्मा, डॉ. प्रवीण (2011), समावेशी शिक्षा, विजया प्रकाशन, लुधियाना।
3.https//drive.google.com/file/d/14k1S7JUZm_FgNdrEY&IgW0zYZFtJWfZa/view\usp=drivesdk
4.https//drive.google.com/file/d/1dy3YE6NlL86kt0lhmtfJhÛCZepc&KQvg/view\usp=drivesdk
5.https//m.facebook.com/story.php\story_fbid=2581896225413047&id=1449282782007736&sfnsn=wiwspwa&eÛtid=ClMwib4Jk7QItLou&d=w&vh=e
6.https//itpd.ncert.gov.in/course/view.php\id=1686§ion=12&lang=en
7.https//ncert.nic.in/pdf/NCF_for_Foundational_Stage_20_October_2022-pdf
8. https//nipunbharat.education.gov.in/
9. https//whc.unesco.org/en/convention
10. https//youtu.be/gYYareodln8